[A.] आवश्यक सूत्र में वर्णित 18 प्रमुख पाप:

1. प्राणातिपात (हिंसा),
2. झूठ,
3. चोरी,
4. मैथुन,
5. द्रव्यमूर्च्छा (परिग्रह),
6. क्रोध,
7. मान,
8. माया,
9. लोभ,
10. राग,
11. द्वेष,
12. कलह,
13. चुगली,
14. दोषारोपण,
15. असंयम में रति और संयम में अरति,
16. परपरिवाद,
17. माया (कपट पूर्ण),
18. मिथ्यादर्शन रूपी शल्य।

[B.] जैन सभाओं पर एक नजर मुख्य बिन्दु पर:

1. **प्रथम जैन सभा:** यह सभा चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में 322-298 ई० पू० में पाटलिपुत्र में हुई थी। इसमें जैन धर्म के प्रधान भाग 12 अंगों का सम्पादन हुआ। यह सभा भद्रबाहु और सम्भूति विजय नामक स्थविरों के निरीक्षण में हुई थी।
2. **द्वितीय जैन सभा:** यह सभा छठी शताब्दी (512ई०) में देवर्धि क्षमाश्रमण के नेतृत्व में गुजरात के वल्लभी नामक स्थान पर हुई। इसमें धर्म ग्रंथों का अंतिम संकलन किया गया और इन्हें लिपिबद्ध किया गया।

जैन धर्म में कर्म के आठ(8) भेद:

1. मोहनीय
2. नामकर्म
3. गोत्रकर्म
4. आयुकर्म
5. वेदनीय
6. ज्ञानावरणीय
7. अन्तराय कर्म
8. दर्शनावरणीय कर्म।

जैन धर्म के तीर्थंकर:

Teacher's Signature: ....

Continue...

(1) ऋषभदेव
(2) अजितनाथ
(3) सम्भवनाथ
(4) अभिनन्दन
(5) सुमितनाथ
(6) पद्मप्रभु
(7) सुपार्श्वनाथ
(8) चंद्र प्रभा
(9) सुविधि
(10) शीतलनाथ
(11) श्रेयांशनाथ
(12) वासुपूज्य
(13) विमलनाथ
(14) अनन्तनाथ
(15) धर्मनाथ
(16) शांतिनाथ
(17) कुंथुनाथ
(18) अरनाथ
(19) मल्लिनाथ
(20) मुनिसुव्रतनाथ
(21) नेमिनाथ
(22) अरिष्टनेमि
(23) पार्श्वनाथ
(24) महावीर

○ **अर्थ :-**

(क) सामायिक : पापों से मुक्त होकर चिन्तन करना ।

(ख) अतिथि सम्विभाग : अतिथि को भोजन देना एवं पूजा पाठ करना

(ग) जैन दर्शन : जैनधर्म में ईश्वर की मान्यता नहीं थी। जैन दर्शन द्वैतवादी तत्व ज्ञान में विश्वास रखता है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति और आत्मा दो तत्व हैं, जिनसे मिलकर मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इन दो तत्वों में प्रकृति जहाँ नाशवान है, वहाँ आत्मा अनन्त और विकासशील है। आत्मा के विकास से ही मनुष्य निर्वाण की प्राप्ति कर सकता है। जैन दर्शन 7 तत्वों को मानता है - जीव या आत्मा, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष प्रकृति या पुद्गल, जीव व अजीव ।